चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	30-10-25	9	4-6

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार : काम्बोज

हकृवि के वानिकी विभाग ने लगायीं पौधों की विभिन्न प्रजातियां

हिसार, 29 अक्तूबर (हप्र)

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज पौधारोपण करते हुए।-निस

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि पर्यावरण प्रदूषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका संपूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। कुलपति ने बताया कि थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सूखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है जो लम्बे समय तक उपयोग में लिया जा सकता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है। उन्होंने बताया कि मोरिंगा का प्रत्येक भाग पोषण के लिए उपयोगी है। इसकी पत्तियाँ खनिज तत्वों, विटामिनों और अन्य आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होती हैं। औषधीय दृष्टि से मोरिंगा अनेक गुणों से युक्त है। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, कैंसररोधी, मधुमेहरोधी और रोगाणुरोधी एजेंट के रूप में कार्य करता है। इन विशेषताओं के कारण मोरिंगा को सही मायनों में चमत्कारी वृक्ष कहा जाता है। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए,डी,सी से भरपूर होती हैं। वानिकी विभागाध्यक्ष अध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया गया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढ़ाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	30-10-25	4	1-4

आयोजन • वानिकी विभाग का मिट्टी से थाली तक-खेजड़ी एवं सहजन यानी मोरिंगा का पौधरोपण कार्यक्रम

मोरिंगा की पत्तियां कैंसर और मधुमेह रोधी के अलावा शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, खेजड़ी की कच्ची सांगरी में प्रोटीन-फाइबर : वीसी

खेजड़ी की सांगरी से पाउडर बना बिस्कुट व बेकरी आइटम भी हो सकते हैं तैयार

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग ने मिट्टी से थाली तक-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। इसकी कच्ची सांगरी में प्रोटीन औसतन 8 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 58 प्रतिशत, फाइबर 28 प्रतिशत, वसा 2 प्रतिशत, कैल्शियम 0.4 प्रतिशत तथा आयरन 0.2 प्रतिशत पाया जाता है। इसी प्रकार पक्की फली में प्रोटीन 8-15 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 40-50 प्रतिशत, फाइबर 9-21 प्रतिशत तथा शर्करा 8-15 प्रतिशत पाया जाता है।

थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सुखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है।

एचएयू में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज पौधारोपण करते हुए।

मोरिंगा का प्रत्येक भाग पोषक... इसमें विटामिन ए, डी और सी भरपूर, पत्तियों में मिलता है कैल्शियम, पोटाशियम व आयरन भी

मोरिंगा का प्रत्येक भाग पोषण के लिए उपयोगी है। इसकी पत्तियां खनिज तत्वों, विटामिनों और अन्य आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होती हैं। औषधीय दृष्टि से मोरिंगा अनेक गुणों से युक्त है। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, कैंसररोधी, मधुमेहरोधी और रोगाणुरोधी एजेंट के रूप में कार्य करता है। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए, डी, सी से भरपूर होती हैं। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग होंगे।

खेजड़ी बढ़ाता है मिट्टी की उर्वरा शक्ति : डॉ. संदीप

वानिकी विभाग अध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढ़ाता है। इस वृक्ष की फलियां स्थानीय रूप से सांगरी के रूप में जानी जाती हैं, जिसमें पोषक तत्व भरपूर मात्रा मे होते हैं। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष सहित शिक्षक, गैर-शिक्षक कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने भी पौधरोपण किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	30-10-21	4	1-4

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार : प्रो . काम्बोज

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। उन्होंने कहा कि इसकी कच्ची सांगरी में प्रोटीन औसतन 8 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 58 प्रतिशत, फाइबर 28 प्रतिशत, वसा 2 प्रतिशत, कैल्शियम 0.4 प्रतिशत तथा आयरन 0.2 प्रतिशत पाया जाता है। इसी प्रकार पक्की फली में प्रोटीन 8-15 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 40-50 प्रतिशत, फाइबर 9-21 प्रतिशत तथा शर्करा 8-15 प्रतिशत पाया जाता है। कुलपति ने बताया कि थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सुखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है जो लम्बे समय तक उपयोग में लिया जा सकता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है।

कुलपति प्रो . बीआर काम्बोज पौधारोपण करते हुए • पीआरओ

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	30-10-25	12	3-6

हकृवि के वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण व रिसर्च के लिए विभिन्न प्रजातियां लगाई

पोषण व जीवन का आधार होते हैं खेजड़ी और मोरिंगा : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि पर्यावरण प्रदूषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। कुलपति ने बताया कि थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सुखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है जो लम्बे समय तक उपयोग में लिया जा सकता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है। उन्होंने बताया कि मोरिंगा का प्रत्येक भाग पोषण के लिए उपयोगी है। इसकी पत्तियां खनिज तत्वों, विटामिनों और अन्य आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होती हैं। औषधीय दृष्टि से मोरिंगा अनेक गुणों से युक्त है। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, कैंसररोधी, मधुमेहरोधी और रोगाणुरोधी एजेंट के रूप में कार्य करता है।

हिसार। पौधरोपण करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य। *फोटो : हरिभूमि*

खेजड़ी बढ़ाती है फसल की उत्पादकता

वानिकी विभागाध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया गया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढ़ाता है। इस वृक्ष की फलियां स्थानीय रूप से सांगरी के रूप में जानी जाती हैं, जिसमें पोषक तत्व भरपूर मात्रा मे होते हैं। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष सहित शिक्षक, गैर-शिक्षक कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने भी पौधरोपण किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	30.10.25	4	2-5

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन के आधार : प्रो. कांबोज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वानिकी विभाग की ओर से बुधवार को 'मिट्टी से थाली तक' थीम पर खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। सतत पोषण और पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे

'मिट्टी से थाली तक' पौधरोपण कार्यक्रम रिसर्च और प्रसार के लिए लगाई गई विभिन्न प्रजातियां

लगाए, जिन्हें भविष्य में रिसर्च व प्रसारण कार्यों के लिए प्रयोग किया जाएगा।

प्रो. कांबोज ने कहा कि खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार है। बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है, ऐसे में शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्रों का अत्यंत उपयोगी वृक्ष है, जिसका प्रत्येक भाग मनुष्य और पशुओं दोनों के लिए लाभदायक है।

हिसार में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज पौधरोपण करते हुए। स्रोत : संस्थान

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	30.10.25	5	6-8

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार : प्रो. काम्बोज

हिसार, 29 अक्तूबर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'- खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे। प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि पर्यावरण प्रदूषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। उन्होंने खेजड़ी के पोषकीय महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी कच्ची सांगरी में प्रोटीन औसतन 8 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 58 प्रतिशत, फाइबर 28 प्रतिशत, वसा 2 प्रतिशत, कैल्शियम 0.4 प्रतिशत तथा आयरन 0.2 प्रतिशत पाया जाता है। इसी प्रकार पक्की फली में प्रोटीन 8-15 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 40-50 प्रतिशत, फाइबर 9-21 प्रतिशत तथा शर्करा 8-15 प्रतिशत पाया जाता है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पौधारोपण करते हुए।

कुलपति ने बताया कि थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सुखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है जो लम्बे समय तक उपयोग में लिया जा सकता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है।

वानिकी विभागाध्यक्ष अध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया गया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढाता है। इस वृक्ष की फलियाँ स्थानीय रूप से सांगरी के रूप में जानी जाती हैं, जिसमें पोषक तत्व भरपूर मात्रा मे होते हैं। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष सहित शिक्षक, गैर-शिक्षक कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने भी पौधरोपण किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	30.10.23	3	7-8

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार: प्रो. काम्बोज

हकृवि के वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण व रिसर्च के लिए विभिन्न प्रजातियां लगाई

हिसार, 29 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पौधारोपण करते हुए

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि पर्यावरण प्रदुषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। उन्होंने खेजड़ी के पोषकीय महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मोरिंगा का प्रत्येक भाग पौषण के लिए उपयोगी है। इसकी पत्तियाँ खनिज तत्वों, विटामिनों और अन्य आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होती हैं। औषधीय दृष्टि से मोरिंगा अनेक गुणों से युक्त है। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, कैंसररोधी, मधुमेहरोधी और रोगाणुरोधी एजेंट के रूप में कार्य करता है। वानिकी विभागाध्यक्ष अध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया गया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढ़ाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	29.10.2025	--	--

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार : प्रो. काम्बोज

हकृवि के वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण व रिसर्च के लिए विभिन्न प्रजातियां लगाई

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पर्यावरण प्रदुषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सुखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है जो लम्बे समय तक उपयोग में लिया जा सकता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है। उन्होंने बताया कि मोरिंगा का प्रत्येक भाग पोषण के लिए उपयोगी है। इसकी पत्तियाँ खनिज तत्वों, विटामिनों और अन्य आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होती हैं। औषधीय दृष्टि से मोरिंगा अनेक गुणों से युक्त है।

वानिकी विभागाध्यक्ष अध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया गया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढ़ाता है। इस वृक्ष की फलियां स्थानीय रूप से सांगरी के रूप में जानी जाती हैं, जिसमें पौषक तत्व भरपूर मात्रा मे होते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	29.10.2025	--	--

खेजड़ी और मोरिंगा पोषण व जीवन का आधार : प्रो. बीआर कम्बोज

हकृवि के वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण व रिसर्च के लिए विभिन्न प्रजातियां लगाई

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हिसार 29 अक्टूबर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वानिकी विभाग द्वारा 'मिट्टी से थाली तक'-खेजड़ी एवं सहजन (मोरिंगा) का पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वानिकी विभाग द्वारा सतत पोषण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने खेजड़ी और मोरिंगा की विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए जो रिसर्च व प्रसारण के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

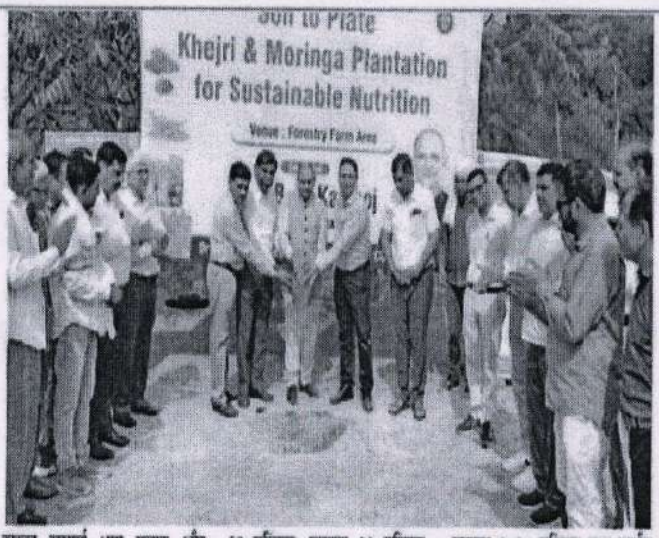

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि पर्यावरण प्रदूषण का मानव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, इसलिए शरीर को अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है। खेजड़ी शुष्क क्षेत्र का बहुत महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसका सम्पूर्ण भाग मनुष्य और पशुओं के लिए लाभदायक है। उन्होंने खेजड़ी के पोषकीय महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी कच्ची सांगरी में प्रोटीन औसतन 8 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 58 प्रतिशत, फाइबर 28 प्रतिशत, वसा 2 प्रतिशत, कैल्शियम 0.4 प्रतिशत तथा आयरन 0.2 प्रतिशत पाया जाता है। इसी प्रकार पकी फली में प्रोटीन 8-15 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 40-50 प्रतिशत, फाइबर 9-21 प्रतिशत तथा शर्करा 8-15 प्रतिशत पाया जाता है। कुलपति ने बताया कि थार शोभा खेजड़ी से प्राप्त सांगरी आय का एक मुख्य स्त्रोत है। कच्ची फलियां, ताजी व सुखी हुई दोनों अवस्थाओं में उपयोग में ली जाती हैं। सांगरी से आचार भी बनता है जो लम्बे समय तक उपयोग में लिया जा सकता है। इसकी पकी हुई सुखी फली का पाउडर बनाया जा सकता है, जिससे बिस्कुट जैसे बेकरी आइटम तैयार की जा सकती है।

उन्होंने बताया कि मोरिंगा का प्रत्येक भाग पोषण के लिए उपयोगी है।

इसकी पत्तियाँ खनिज तत्वों, विटामिनों और अन्य आवश्यक फाइटोकेमिकल्स से भरपूर होती हैं। औषधीय दृष्टि से मोरिंगा अनेक गुणों से युक्त है। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, कैंसररोधी, मधुमेहरोधी और रोगाणुरोधी एजेंट के रूप में कार्य करता है। इन विशेषताओं के कारण मोरिंगा को सही मायनों में चमत्कारी वृक्ष कहा जाता है। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए,डी,सी से भरपूर होती हैं।

वानिकी विभागाध्यक्ष अध्यक्ष डॉ. संदीप आर्य ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए बताया कि वानिकी विभाग ने विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों पर परीक्षण किए हैं, जिसमें पाया गया कि खेजड़ी के साथ जो फसल बोई जाती है उस फसल की उत्पादकता सामान्य से अधिक होती है। यह मिट्टी की उर्वरता क्षमता को बढ़ाता है। इस वृक्ष को फलियाँ स्थानीय रूप से सांगरी के रूप में जानी जाती हैं, जिसमें पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं। इस अवसर पर कुलसचिव सहित विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष सहित शिक्षक, गैर-शिक्षक कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने भी पौधरोपण किया।